Central University of Haryana

NAAC Accredited 'A' Grade University

Public Relations Office

Hon'ble Vice Chancellor visited Tigrana Archaeological Site

Newspaper: Amar Ujala **Date: 15.10.2021**

इतिहास को जानने में मददगार होगी हकेंविवि की खोज : प्रो. टंकेश्वर

पांच हजार साल पुराने औद्योगिक व व्यापारिक पहलुओं को समाने लाएगी खोज

संवाद न्यूज एजेंसी

महेंद्रगढ़। हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय के इतिहास एवं पुरातत्व विभाग द्वारा तिगड़ाना स्थित पुरातत्व स्थल पर जारी खोज कार्य का वीरवार को कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार निरीक्षण किया। विभाग के प्रभारी डॉ. नरेंद्र परमार की देखरेख में जारी खोज कार्य के संबंध में कुलपति ने कहा कि इसके माध्यम से भारतीय पुरातन संस्कृति के अंतर्गत विकसित नगरीय व्यवस्था व उससे जुड़े तथ्यों को जानने में मदद मिलेगी।

उन्होंने कहा कि अभी तक इस शोधकार्य के माध्यम से ज्ञात हुआ है कि हड़प्पा काल में तांबे के औजार व आभूषण प्रयोग में लाए जाते थे, तिगड़ाना में हड़प्पा कालीन फियांस की औद्योगिक इकाई उपलब्ध थी। साथ ही इस शोध कार्य में यह भी ज्ञात हुआ है कि भारत में यूरोपियन देशों से पूर्व उच्चस्तरीय तकनीक का विकास हुआ था।

तिगड़ाना पुरातत्व स्थल का भ्रमण करते कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार। संवाद

हड़प्पा काल में तांबे के औजार व आभूषणों का होता था प्रयोग

तिगड़ाना पुरातात्विक उत्खनन के निदेशक डॉ. नरेंद्र परमार ने बताया कि यह शोध कार्य के इस क्षेत्र में 5 हजार साल पुराने औद्योगिक व व्यापारिक पहलुओं को समाने ला रहा है। यहां के उत्खनन से धातु, अर्ध कीमती पत्थर, नगर योजना की उच्च स्तरीय तकनीक के प्रमाण मिले हैं। इस कार्य के अगले चरण में प्राचीन भारत के तकनीकी पक्षों का अवसर मिलेगा।

सैन्य मनोविज्ञान की भूमिका पर प्रकाश डाला

महेंद्रगढ़। हकेंविवि में भारतीय सशस्त्र सेनाओं में सैन्य मनोविज्ञान की भूमिका विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। विशेषज्ञ वक्ता के रूप में रक्षा मनोवैज्ञानिक अनुसंधान संस्थान (डीआईपीआर), रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ), नई दिल्ली के वैज्ञानिक डॉ. अविनाश अवस्थी उपस्थित रहे। मनोविज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. वीएन यादव ने इस आयोजन के उद्देश्य और उपयोगिता पर प्रकाश डाला। डॉ. अविनाश ने भारतीय सशस्त्र बलों में सैन्य मनोविज्ञान की भूमिका पर प्रकाश डाला। डीआईपीआर की कार्यप्रणाली का परिचय देते हुए उन्होंने कार्मिक चयन, सैन्य नीति, व्यवहार प्रशिक्षण, अंतरराष्ट्रीय राष्ट्रीय सहयोग, शैक्षिक सहयोग, अनुसंधान आदि में सैन्य मनोविज्ञान के चुनौतियों एवं अवसरों पर प्रतिभागियों को संबोधित किया। संवाद

Central University of Haryana

NAAC Accredited 'A' Grade University

Public Relations Office

Newspaper: Dainik Bhaskar **Date: 15-10-2021**

हड़प्पाकालीन इतिहास को जानने में मददगार होगी केंद्रीय विवि की खोज

कुलपति प्रो. टंकेश्वर ने किया तिगड़ाना पुरातत्त्व स्थल का दौरा

भास्कर न्यूज | महेंद्रगढ़

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेंवि), महेंद्रगढ़ के इतिहास एवं पुरातत्त्व विभाग द्वारा तिगड़ाना स्थित पुरातत्त्व स्थल पर जारी खोज कार्य का विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार ने दौरा किया। विभाग के प्रभारी डॉ. नरेंद्र परमार ने नेतृत्व में जारी इस खोज कार्य के संबंध में कुलपति ने कहा कि अवश्य ही इसके माध्यम से भारतीय पुरातन संस्कृति के अंतर्गत विकसित नगरीय व्यवस्था व उससे जुड़े तथ्यों को जानने में

मदद मिलेगी। उन्होंने कहा कि अभी तक इस शोध कार्य के माध्यम से ज्ञात हुआ है कि हड़प्पा काल में तांबे के औजार व आभूषण प्रयोग में लाए जाते थे, तिगड़ाना में हड़प्पा कालीन फियांस की औद्योगिक इकाई उपलब्ध थी। साथ ही इस शोध कार्य में यह भी ज्ञात हुआ है कि भारत में यूरोपियन देशों से पूर्व उच्च स्तरीय तकनीक का विकास हुआ था।

तिगड़ाना पुरातात्विक उत्खनन के निदेशक डॉ. नरेंद्र परमार ने बताया कि यह शोध कार्य इस क्षेत्र में 5000 साल पुराने औद्योगिक व व्यापारिक पहलुओं को समाने ला रहा है। यहां के उत्खनन से धातु, अर्धकीमती पत्थर, नगर योजना आदि की उच्च स्तरीय तकनीक के प्रमाण मिले हैं। उन्होंने कहा कि अवश्य ही इस कार्य के अगले चरण में प्राचीन भारत के तकनीकी पक्षों का अवसर मिलेगा। उन्होंने कहा कि इस कार्य में विश्वविद्यालय कुलपति का निर्देशन व मार्गदर्शन हम सभी में ऊर्जा का संचार कर रहा है और उनकी अपेक्षाओं पर खरा उतरने का प्रयास करेंगे।

Central University of Haryana

NAAC Accredited 'A' Grade University

Public Relations Office

Newspaper: Dainik Jagran **Date: 15-10-2021**

पुरातत्व स्थल पर खोज कार्य का किया निरीक्षण

तिगड़ाना पुरातत्व स्थल का निरीक्षण करते कुलपति प्रो. टंकेश्वर (चश्मे में) ● साभार हकेंवि

संस, महेंद्रगढ़: हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय महेंद्रगढ़ के इतिहास एवं पुरातत्व विभाग द्वारा भिवानी जिले के गांव तिगड़ाना स्थित पुरातत्व स्थल पर जारी खोज कार्य का विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार ने निरीक्षण किया। विभाग के प्रभारी डा. नरेंद्र परमार ने नेतृत्व में जारी इस खोज कार्य के संबंध में कुलपति ने कहा कि अवश्य ही इसके माध्यम से भारतीय पुरातन संस्कृति के अंतर्गत विकसित नगरीय व्यवस्था व उससे जुड़े तथ्यों को जानने में मदद मिलेगी। अभी तक इस शोध कार्य के माध्यम से ज्ञात हुआ है कि हड़प्पा काल में तांबे के औजार व आभूषण प्रयोग में लाए जाते थे। तिगड़ाना में हड़प्पा कालीन फियांस की औद्योगिक इकाई उपलब्ध थी। साथ ही इस शोध कार्य में यह भी ज्ञात हुआ है कि भारत में यूरोपियन देशों से पूर्व उच्च स्तरीय तकनीक का विकास हुआ था। डा. नरेंद्र ने बताया कि शोध कार्य क्षेत्र में 5000 साल पुराने औद्योगिक व व्यापारिक पहलुओं को समाने ला रहा है। धातु, अर्धकीमती पत्थर, नगर योजना की उच्चस्तरीय तकनीक के प्रमाण मिले हैं।

Central University of Haryana

NAAC Accredited 'A' Grade University

Public Relations Office

Newspaper: Dainik Tribune **Date: 15-10-2021**

कुलपति ने किया तिगड़ाना पुरातत्व स्थल का दौरा

'हड़प्पाकालीन इतिहास को जानने में मदद करेगी हकेवि की खोज'

महेन्द्रगढ़, 14 अक्तूबर (निस)

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय, महेंद्रगढ़ के इतिहास एवं पुरातत्व विभाग द्वारा तिगड़ाना स्थित पुरातत्त्व स्थल पर जारी खोज कार्य का विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार ने दौरा किया। विभाग के प्रभारी डॉ. नरेंद्र परमार के नेतृत्व में जारी इस खोज कार्य के संबंध में कुलपति ने कहा कि अवश्य ही इसके माध्यम से भारतीय पुरातन संस्कृति के अंतर्गत विकसित नगरीय व्यवस्था व उससे जुड़े तथ्यों को जानने में मदद मिलेगी।

उन्होंने कहा कि अभी तक इस शोध कार्य के माध्यम से ज्ञात हुआ है कि हड़प्पा काल में तांबे के औजार व आभूषण प्रयोग में लाए जाते थे। तिगड़ाना में हड़प्पाकालीन फियांस की औद्योगिक इकाई उपलब्ध थी। साथ ही इस शोध कार्य में यह भी ज्ञात हुआ है कि भारत में यूरोपियन देशों से पूर्व उच्च स्तरीय तकनीक का विकास हुआ था। तिगड़ाना पुरातात्त्विक उत्खनन के निदेशक डॉ. नरेंद्र परमार ने बताया कि यह शोध कार्य इस क्षेत्र में 5000 साल पुराने औद्योगिक व व्यापारिक पहलुओं को सामने ला रहा है। यहां के उत्खनन से धातु, अर्धकीमती पत्थर, नगर योजना आदि की उच्च स्तरीय तकनीक के प्रमाण मिले हैं।

उन्होंने कहा कि अवश्य ही इस कार्य के अगले चरण में प्राचीन भारत के तकनीकी पक्षों को जानने का अवसर मिलेगा।

महेन्द्रगढ़ के तिगड़ाना में बृहस्पतिवार को पुरातत्त्व स्थल का अवलोकन करते विवि के कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार। -निस

Central University of Haryana

NAAC Accredited 'A' Grade University

Public Relations Office

Newspaper: Haribhoomi **Date: 15-10-2021**

इतिहास जानने में मददगार होगी खोज

महेंद्रगढ़। हरियाणा केंद्रीय विवि के इतिहास एवं पुरातत्व विभाग की ओर से तिगड़ाना स्थित पुरातत्व स्थल पर जारी खोज कार्य का विवि कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार ने दौरा किया। विभाग के प्रभारी डा. नरेंद्र परमार ने नेतृत्व में जारी खोज कार्य में कुलपति ने कहा कि अवश्य ही भारतीय पुरातन संस्कृति के अंतर्गत विकसित नगरीय व्यवस्था के तथ्यों को जानने में मदद मिलेगी।

Central University of Haryana

NAAC Accredited 'A' Grade University

Public Relations Office

Newspaper: Jagat Kranti **Date: 15-10-2021**

हड़प्पाकालीन इतिहास को जानने में मददगार होगी हकेंवि की खोज

⏭ कुलपति ने किया तिगड़ाना पुरातत्त्व स्थल का दौरा

महेन्द्रगढ़ ⏭ ईश्वर तिवारी

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय, महेंद्रगढ़ के इतिहास एवं पुरातत्त्व विभाग द्वारा तिगड़ाना स्थित पुरातत्त्व स्थल पर जारी खोज कार्य का विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार ने दौरा किया। विभाग के प्रभारी डॉ. नरेंद्र परमार के नेतृत्व में जारी इस खोज कार्य के संबंध में कुलपति ने कहा कि अवश्य ही इसके माध्यम से भारतीय पुरातन संस्कृति के अंतर्गत विकसित नगरीय व्यवस्था व उससे जुड़े तथ्यों को जानने में मदद मिलेगी। उन्होंने कहा कि अभी तक इस शोध कार्य के माध्यम से ज्ञात हुआ है कि हड़प्पा काल में तांबे के औजार व आभूषण प्रयोग में लाए जाते थे। तिगड़ाना में हड़प्पाकालीन फियांस की औद्योगिक इकाई उपलब्ध थी। साथ ही इस शोध कार्य में यह भी ज्ञात हुआ है कि भारत में यूरोपियन देशों से पूर्व उच्च स्तरीय तकनीक का विकास हुआ था। तिगड़ाना पुरातात्त्विक उत्खनन के निदेशक डॉ. नरेंद्र परमार ने बताया कि यह शोध कार्य इस क्षेत्र में 5000 साल पुराने औद्योगिक व व्यापारिक पहलुओं को समाने ला रहा है। यहां के उत्खनन से धातु, अर्धकीमती पत्थर, नगर योजना आदि की उच्च स्तरीय तकनीक के प्रमाण मिले हैं।

Central University of Haryana

NAAC Accredited 'A' Grade University

Public Relations Office

Newspaper: Punjab Kesari **Date: 15-10-2021**

हड़प्पाकालीन इतिहास को जानने में मददगार होगी हकेंवि की खोज

कुलपति ने किया तिगड़ाना पुरातत्व स्थल का दौरा

महेंद्रगढ़, 14 अक्तूबर (परमजीत, मोहन): हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय महेंद्रगढ़ के इतिहास एवं पुरातत्व विभाग द्वारा तिगड़ाना स्थित पुरातत्व स्थल पर जारी खोज कार्य का विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार ने दौरा किया। विभाग के प्रभारी डा. नरेंद्र परमार ने नेतृत्व में जारी इस खोज कार्य के संबंध में कुलपति ने कहा कि अवश्य ही इसके माध्यम से भारतीय पुरातन संस्कृति के अंतर्गत विकसित नगरीय व्यवस्था व उससे जुड़े तथ्यों को जानने में मदद मिलेगी।

उन्होंने कहा कि अभी तक इस शोध कार्य के माध्यम से ज्ञात हुआ है कि हड़प्पा काल में तांबे के औजार व आभूषण प्रयोग में लाए जाते थे, तिगड़ाना में हड़प्पा कालीन फियांस की औद्योगिक इकाई उपलब्ध थी। साथ ही इस शोध कार्य में यह भी ज्ञात हुआ है कि भारत में यूरोपियन देशों से पूर्व उच्च स्तरीय तकनीक का विकास हुआ था। तिगड़ाना पुरातात्विक उत्खनन के निदेशक डा. नरेंद्र परमार ने बताया कि यह शोध कार्य इस क्षेत्र में 5000 साल पुराने औद्योगिक व व्यापारिक पहलुओं को सामने ला रहा है। यहां के उत्खनन से धातु, अर्धकीमती पत्थर, नगर योजना आदि की उच्च स्तरीय तकनीक के प्रमाण मिले हैं। उन्होंने कहा कि अवश्य ही इस कार्य के अगले चरण में प्राचीन भारत के तकनीकी पक्षों का अवसर मिलेगा। उन्होंने कहा कि इस कार्य में विश्वविद्यालय कुलपति का निर्देशन व मार्गदर्शन हम सभी में ऊर्जा का संचार कर रहा है और उनकी अपेक्षाओं पर खरा उतरने का प्रयास करेंगे।

तिगड़ाना पुरातत्व स्थल का भ्रमण करते कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार व अन्य।

Central University of Haryana

NAAC Accredited 'A' Grade University

Public Relations Office

Newspaper: Punjab Kesari (Rewari) **Date: 15-10-2021**

हड़प्पाकालीन इतिहास को जानने में मददगार होगी हकेवि की खोज

- कुलपति ने किया तिगड़ाना पुरातत्त्व स्थल का दौरा

महेंद्रगढ़, प्रवीण कुमार (पंजाब केसरी) :हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेवि), महेंद्रगढ़ के इतिहास एवं पुरातत्त्व विभाग द्वारा तिगड़ाना स्थित पुरातत्त्व स्थल पर जारी खोज कार्य का विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार ने दौरा किया। विभाग के प्रभारी डॉ. नरेंद्र परमार ने नेतृत्व में जारी इस खोज कार्य के संबंध में कुलपति ने कहा कि अवश्य ही इसके माध्यम से भारतीय पुरातन संस्कृति के अंतर्गत विकसित नगरीय व्यवस्था व उससे

जुड़े तथ्यों को जानने में मदद मिलेगी। उन्होंने कहा कि अभी तक इस शोध कार्य के माध्यम से ज्ञात हुआ है कि हड़प्पा काल में तांबे के औजार व आभूषण प्रयोग में लाए जाते थे, तिगड़ाना में हड़प्पा कालीन फियांस की औद्योगिक इकाई उपलब्ध थी। साथ ही इस शोध कार्य में यह भी ज्ञात हुआ है कि भारत में यूरोपियन देशों से पूर्व उच्च स्तरीय तकनीक का विकास हुआ था। तिगड़ाना पुरातात्त्विक उत्खनन के निदेशक डॉ. नरेंद्र परमार ने बताया कि यह शोध कार्य इस क्षेत्र में 5000 साल पुराने औद्योगिक व व्यापारिक पहलुओं को समाने ला रहा है। यहां के उत्खनन से धातु, अर्धकीमती पत्थर, नगर योजना आदि की उच्च स्तरीय तकनीक के प्रमाण मिले हैं। उन्होंने कहा कि अवश्य ही इस कार्य के अगले चरण में प्राचीन भारत के तकनीकी पक्षों का अवसर मिलेगा। उन्होंने कहा कि इस कार्य में विश्वविद्यालय कुलपति का निर्देशन व मार्गदर्शन हम सभी में ऊर्जा का संचार कर रहा है और उनकी अपेक्षाओं पर खरा उतरने का प्रयास करेंगे।

Central University of Haryana

NAAC Accredited 'A' Grade University

Public Relations Office

Newspaper: Rashtriya Sahara **Date: 15-10-2021**

हड़प्पाकालीन इतिहास को जानने में मददगार होगी हकेवि की खोज

महेंद्रगढ़/ नारनौल (एसएनबी)। हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेवि), महेंद्रगढ़ के इतिहास एवं पुरातत्त्व विभाग द्वारा तिगड़ाना स्थित पुरातत्त्व स्थल पर जारी खोज कार्य का विवि कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार ने दौरा किया।

विभाग के प्रभारी डॉ. नरेंद्र परमार के नेतृत्व में जारी इस खोज कार्य के संबंध में कुलपति ने कहा कि अवश्य ही इसके माध्यम से भारतीय पुरातन संस्कृति के अंतर्गत विकसित नगरीय व्यवस्था व उससे जुड़े तथ्यों को जानने में मदद मिलेगी। उन्होंने कहा कि अभी तक इस शोध कार्य के माध्यम से ज्ञात हुआ है कि हड़प्पा काल में तांबे के औजार व आभूषण प्रयोग में लाए जाते थे, तिगड़ाना में हड़प्पा कालीन फियांस की औद्योगिक इकाई उपलब्ध थी। साथ ही इस शोध कार्य में यह भी ज्ञात हुआ है कि भारत में यूरोपियन देशों से पूर्व उच्च स्तरीय तकनीक का विकास हुआ था।

तिगड़ाना पुरातात्त्विक उत्खनन के निदेशक डॉ. नरेंद्र परमार ने बताया कि यह शोध कार्य इस क्षेत्र में 5000 साल पुराने औद्योगिक व व्यापारिक पहलुओं को सामने ला रहा है। यहां के उत्खनन से धातु, अर्धकीमती पत्थर, नगर योजना आदि की उच्च स्तरीय तकनीक के प्रमाण मिले हैं। उन्होंने कहा कि अवश्य ही इस कार्य के अगले चरण में प्राचीन भारत के तकनीकी पक्षों का अवसर मिलेगा। उन्होंने कहा कि इस कार्य में विश्वविद्यालय कुलपति का निर्देशन व मार्गदर्शन हम सभी में ऊर्जा का संचार कर रहा है और उनकी अपेक्षाओं पर खरा उतरने का प्रयास करेंगे।